दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Chetan kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	4	8	0	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

प्रयास काफी अच्छा है। अभ्यास करते रहें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 134 टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी भाषा विविध क्षेत्रों के सभी आयामों को उद्भासित करने की संभावनाओं से परिपूर्ण रही है। किन्तु, कम्प्यूटरीकरण के युग में अधिकांश विद्वानों ने आशंका जताई कि हिन्दी अंग्रेजी प्रसार को रोक नहीं पाएगी और हिन्दी का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। इस बात का कारण भी स्पष्ट था कि अधिकांश तकनीकी विकास अंग्रेजी में हो रहे थे।

शुरुआती स्तर पर ही भारतीय भाषाओं से संबंधित सॉफ्टवेयर अंग्रेजी के लिए ही उपयुक्त होने के कारण सभी निर्देश अंग्रेजी में दिए जाते और विविध एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर, कीबोर्ड एवं फॉन्ट के सॉफ्टवेयर की विलता के कारण हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओं के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रयोग में समस्याएँ निहित थी। ऐसे में यूनिकोड के जरिये इन सभी समस्याओं का समाधान हुआ है। 2012 से पूर्व आस्की का प्रयोग किया जाता, किन्तु उसमें कई व्यावहारिक समस्याएँ थी, यूनिकोड के आने के बाद अंग्रेजी के भाषायी साम्राज्यवाद पर लगाम लगी और हिन्दी भाषा के सभी अक्षरों को मुद्रित करना, स्पैल जाँच करना, एक टेक्स्ट को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना, सभी भारतीय भाषाओं को एक ही मंच पर पाना संभव हुआ है। अब भारतीय भाषाओं का प्रयोग अंग्रेजी की तरह ही सहज व सुबोध हो गया है।

स्पष्ट है यूनिकोड स्थानीय भाषाओं के लिए वरदान है, क्योंकि इसके 1 बाइट में 16 बिट की क्षमता के कारण लगभग 65000 फॉन्ट लिखना संभव हुआ है, जिसमें लगभग सभी भाषाएँ समाहित हो जाती हैं। यूनिकोड द्वारा भाषायी लोकतांत्रिकरण का प्रयास प्रस्तुत है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा विकसित रही है। यद्यपि गुणाकर मुले इस परंपरा को ठोस एवं सूक्ष्म तरीके से शुरू कर चुके थे, किन्तु आगे इस परंपरा में चुनिंदा लेखकों, वैज्ञानिकों ने हाथ आजमाया, जिनमें जयंत विष्णु नार्लीकर अग्रणी थे।

जयंत विष्णु नार्लीकर पेशे से वैज्ञानिक थे, किन्तु अपनी स्थानिकता से जुड़े होने के कारण अंग्रेजी के साथ ही मराठी व हिन्दी में भी लेखन करते थे। वे लब्धप्रतिष्ठित वैज्ञानिक रहे हैं, कॉस्मोलॉजी के क्षेत्र में उनका विशिष्ट योगदान है। वे ब्रिटिश वैज्ञानिक ~~फ्रेड~~ हॉयल के स्थिर अवस्था के सिद्धांत के विश्लेषक थे, यह सिद्धांत बिगबैंग थ्योरी से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतर ~~नील~~ ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का रहस्य सुझाता है। इसके अतिरिक्त वे हॉयल के साथ मिलकर आपेक्षिकता के सिद्धांत पर आधारित ~~ब~~ हॉयल - नार्लीकर सिद्धांत के प्रतिपादक के रूप में ख्यात रहे। ब्रिटिश प्रवास के पश्चात वे ~~टाटा~~ इंस्टिट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च से जुड़े। भारत रहकर उन्हें वैज्ञानिक अवधारणाओं को बोधगम्य तरीके से समझाने के लिए वैज्ञानिक लेखन कार्य से हिन्दी व मराठी साहित्य को ~~किसु~~ समृद्ध किया।

नार्लीकर ने धूमकेतु, ब्रह्माण्ड की यात्रा जैसी वैज्ञानिक लेखन संबंधी कार्यों को अंजाम दिया। हिन्दी भाषा उनके श्लाघ्य अवदान की सदैव आभारी रहेगी।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कम्प्यूटरीकरण की शुरुआत पश्चिमी दुनिया में हुई, अतः कम्प्यूटर पर भाषा प्रयोग व लिपि प्रयोग को लेकर सभी निर्देश एवं तकनीकी प्रयास अंग्रेजी भाषा व रोमन लिपि में हुए। अंग्रेजी व रोमन लिपि के प्रभुत्व के साथ ही ~~भारत~~ कम्प्यूटर भारत पहुँचा।

कम्प्यूटर पर सभी निर्देश मूलतः प्रोग्राम के रूप में दिए जाते हैं, इस हेतु सॉफ्टवेयर दो प्रकार के प्रयुक्त किए जाते हैं - सिस्टम सॉफ्टवेयर तथा एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर।

~~सिस्टम~~ सिस्टम सॉफ्टवेयर के रूप में विण्डो, लिनक्स आदि का प्रयोग है जो हिन्दी आदि भाषाओं में उपलब्ध नहीं है, जिसके लिए निर्देश अंग्रेजी में ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिए जाते हैं। किन्तु एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के जरिये हिन्दी आदि भाषाओं के प्रयोग के प्रयास स्तर के दशक से आरंभ हुए।

दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने शुरुआती स्तर पर कई प्रयास किए, इस संदर्भ में विदेशी कंपनियों के उत्पादों को ग्रहण किया। किन्तु विभिन्न सॉफ्टवेयरों में लिपि प्रयोग को लेकर मानकीकरण के समस्या बनी हुई थी। अतः आस्की जैसे सॉफ्टवेयरों का प्रयोग शुरु किया जिससे हिन्दी सहित अन्य भाषाओं लिपि का कार्य करना आसान हुआ किन्तु अधिक सहजता व सफलता यूनिकोड के आगमन के पश्चात हुआ।

स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि के प्रयास पर्याप्त हैं, किन्तु एक सिस्टम सॉफ्टवेयर की आवश्यकता अभी बनी है, जो सभी भारतीय लिपियों को स्थानिकता प्रदान करे।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पढ़ा जाता है। हिन्दी में पद दो प्रकार के माने गए हैं - विकारी पद तथा अविकारी पद।

विकारी पद वे पद हैं जो लिंग, वचन, काल के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। ~~अविकारी~~ -

विकारी पदों का वर्गीकरण

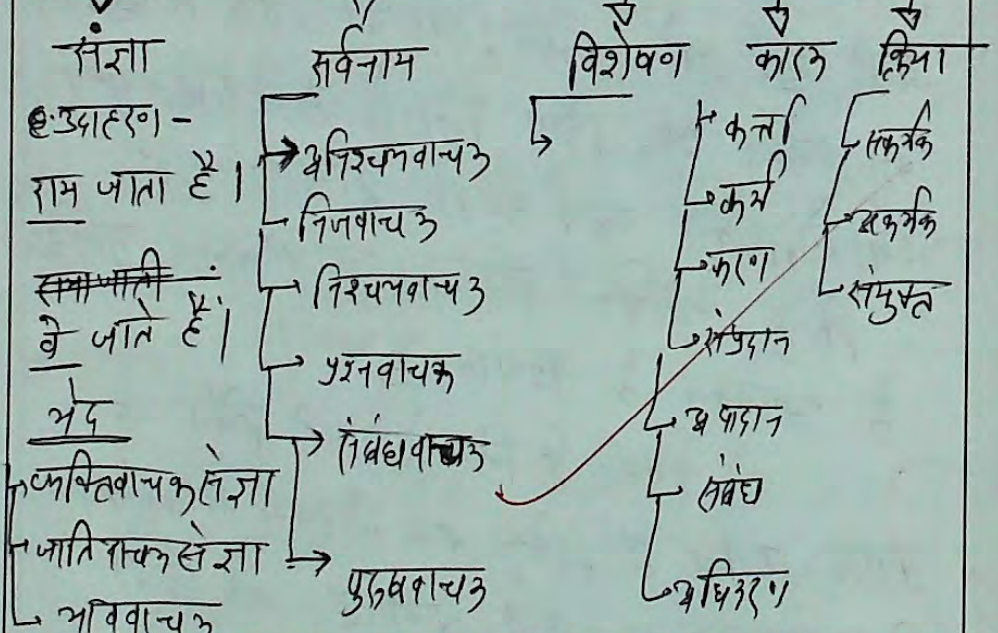

Copyright – Drishti The Vision Foundation

...इस स्थान में प्रश्न ...के अतिरिक्त कुछ ...लिखें।
...ase do not write ...hing except the ...tion number in ...space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अविकारी पदों का वर्गीकरण

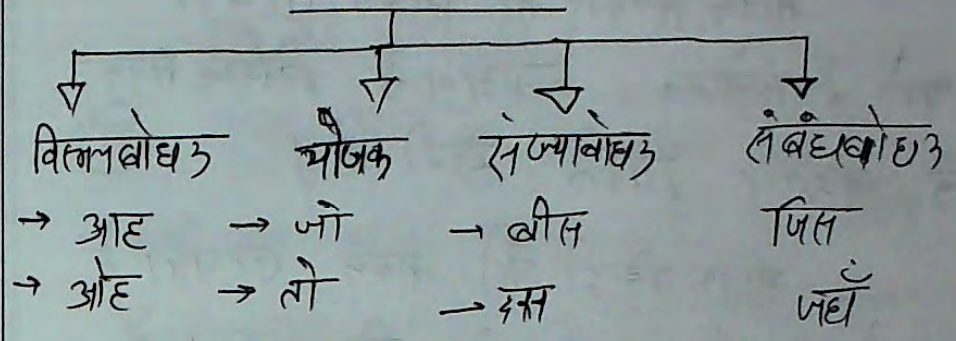

विस्मयबोधक	योजक	संख्याबोधक	संबंधबोधक
→ आह	→ जो	→ बीस	जिस
→ ओह	→ तो	→ दस	जहाँ

स्पष्ट है कि हिन्दी व्याकरण में विकारी व अविकारी शब्द प्रायः निश्चित हो चुके हैं।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिन्दी की वाक्य संरचना पदों के संयोजन, व्याकरण के विशिष्ट नियम के अनुसार निर्मित होती है।

मानक हिन्दी की वाक्य संरचना में सबसे पहले कर्त्ता को लिखा जाता है, तत्पश्चात कर्म, तत्पश्चात क्रिया रूप प्रयुक्त होता है अर्थात कर्त्ता-कर्म-क्रिया रूप, जो कि संस्कृत की भाँति है, वहीं अंग्रेजी में यह कर्त्ता-क्रिया-कर्म के रूप में प्रयुक्त होते हैं -

उदाहरण -
→ राम ने पेन लिया। (हिन्दी)
→ Ram take a pen. (अंग्रेजी)

हिन्दी में वाक्यों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है -

(क) एकल वाक्य → जहाँ केवल एक ही (सधारण वाक्य) कर्त्ता हो और एक ही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कर्म को अंजाम देता है, जैसे -
राम घर जाता है।

(ख) संयुक्त वाक्य - ऐसा वाक्य जिसमें किसी एक कर्ता द्वारा दो या अधिक कार्य ~~संपादित~~ संपादित किए जाते हैं-
उदाहरण - राम घर गया क्योंकि वह भूखा था।

(ग) मिश्रवाक्य → ये दो वाक्य होते हैं जो समान महत्व के होते हैं और किसी योजक पद से जुड़े होते हैं -
उदाहरण - राम घर जाने के लिए तैयार था, परंतु इतने में ही सीता भी उसके साथ चलने की जिद करने लगी।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार कीजिये। 20

प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में भाषा प्रत्येक सशक्त रूप में है। वर्तमान हिन्दी का प्रयोग लगभग 10 उत्तर भारत के ~~राज्यों में~~ राज्यों में प्रथमिक भाषा व प्रशासनिक भाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती है; संविधान से बनी अन्य आर्य भाषाओं वाले राज्यों - पश्चिमी बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, गुजरात, असम, उड़ीसा आदि में द्वितीय भाषा के रूप में स्थान रखती है और शेष दक्षिण भारत तथा उत्तरपूर्वी भारत में कार्यसाधक रूप में प्रयुक्त होती है। इस प्रकार लगभग 70-72% लोग हिन्दी का प्रयोग आसानी से कर पाते हैं।

वर्तमान में हिन्दी का प्रयोग साहित्य से इतर शिक्षा से जुड़े सभी लोगों, राजनीति, प्रशासन, विज्ञान, मानविकी विषयों,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

व्यापारिक क्रियाकलापों में प्रयुक्त हो रही है।

वर्तमान में हिन्दी के प्रयोजन के बढ़ने के पीछे कुछ निश्चित कारण रहे हैं -

(क) हिन्दी ~~लिपि तथा~~ भाषा तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण लगभग पूरा हो चुका है, जिसको अखिल भारतीय स्वरूप देने के लिए आवश्यक परिवर्तनों से जोड़ा है। अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों को हिन्दी में स्वीकारा है। (जैसे - मराठी का 'पावती' शब्द) हिन्दी में न मिलने वाले ध्वनि तथा हिन्दी में न मिलने वाले ध्वनि ध्वनि संकेतों को जगह दी है।

(ख) हिन्दी भाषियों की संख्या सर्वाधिक होने के कारण विज्ञापनों के हिन्दी में प्रसार, हिन्दी फिल्मों के देश-विदेश में प्रसार, पर्यटन के अखिल भारतीय स्वरूप से भाषायी आदान प्रदान, कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग की आसानी आदि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ने प्रयोजन को विस्तृत किया है।

(ग) हिन्दी को संविधान ने राजभाषा का दर्जा दिया है, अतः प्रशासनिक प्रयोग व सरकारी प्रयत्नों के प्रयोग से हिन्दी विकास, विस्तार व प्रयोग के सीमित ही सही, किन्तु प्रयास अवश्य किए हैं।

किन्तु हिन्दी भाषा के प्रयोजन की व्यापक संभावनाओं को पूरी तरह से प्रयुक्त नहीं किया है, इस संदर्भ में कुछ चुनौतियाँ हैं जो प्रयोजन को लेकर संशय पैदा करती हैं–

(1) राजभाषा आयोग ने जिन तकनीकी व विधायी शब्दावलियों का निर्माण करवाया है, उनके प्रयोग को लेकर ठोस कार्यवाही नहीं की है।

(2) हिन्दी भाषा व लिपि के मानकीकरण को लेकर भी चुनौतियाँ शेष हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(3) हिन्दी में वैज्ञानिक, आर्थिक, तकनीकी व दार्शनिक लेखन अपर्याप्त है।

(4) हिन्दी प्रयोजन को लेकर आलीयता व गौरव का भाव न होना, भी अंग्रेजी भाषा को प्रमुख बनाने का मौका देता है।

(5) दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति का न होना भी एक कारण है, प्रशासन में अभी भी अंग्रेजी का बोलबाला है।

स्पष्ट है कि हिन्दी ही एकमात्र स्वदेशी भाषा है जो भारतीयता को अखिल स्तर पर धारण कर सकती है, अतः इसके प्रयोजन को लेकर ईमानदार प्रयास किए जाने चाहिए, जब अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में हिन्दी को मतदान पत्र पर उपयोग किया गया, तो ऐसे प्रयास भारत में अवश्य किए जाने चाहिए, यद्यपि अन्य भाषाओं के भी प्रयोजन की जरूरत हो, जिसके लिए प्रभावी रूप से त्रिभाषा फार्मूला का प्रयोग ईमानदार प्रयास होगा।

10/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी की वचन संरचना प्रायः संस्कृत व्याकरण व्यवस्था से अवतरित है। किन्तु, यह वचन व्यवस्था पूर्णतः संस्कृत की प्रतिलिपि मात्र नहीं है, अपितु सरलीकरण की प्रक्रिया में अपना वजूद खुद खड़ा करती है।

संस्कृत में वचन तीन माने गए हैं- एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। हिन्दी में इस व्यवस्था को सरल करते हुए द्विवचन को बहुवचन में ही समाहित कर दिया है। इस प्रकार हिन्दी में एकवचन तथा बहुवचन ही दो वचन हैं। स्पष्ट है कि ये वचन विकार उत्पन्न करते हैं, जैसे - क्रिया में विकारत्व

वह घर जाता है। (एकवचन)
वे घर जाते हैं। (बहुवचन)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्पष्ट है वचन के कारण संज्ञा पद, सर्वनाम पद, क्रिया पद, विशेषण पद व कारक पदों में विकार उत्पन्न होते हैं।

हिन्दी की वचन संरचना को लेकर प्रायः मानकीकरण हो चुका है, किन्तु प्रयोग को लेकर कुछ समस्याएँ हैं -

(1) पूर्वी हिन्दी में हम का प्रयोग एक वचन के रूप में जबकि 'हम लोग' का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है, जबकि मानक रूप में ये प्रयोग गलत है।

~~2 समस्या~~

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन के क्षेत्र में गुणाकर मूले अमूल्य थाती हैं। उन्हें हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन का त्रीगणेशकर्ता माना जाता है। एक लंबे समय तक वैज्ञानिक लेखन में पड़े सूखे को उन्होंने अपने लेखन से नमी प्रदान की।

गुणाकर मूले के वैज्ञानिक लेखन की खास बात है कि उन्होंने बेहद रोचक, आसान सुबोध व सहज तरीके से विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को खोला। यह बात उनकी 'आपेक्षिकता के सिद्धांत' में अभिपुष्ट होती है।

गुणाकर मूले का विषय विस्तार बेहद विस्तृत रहा है। उन्होंने रसायन, भौतिकी, जीवविज्ञान, नृजातीय विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, अंतरिक्ष,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

चिकित्सा आदि क्षेत्रों में कलम चलाई।

गुणाकर मुले की खास बात यह है कि उन्होंने भारत की प्राचीन वैज्ञानिक चेतना का अनुसंधान किया है। 'भास्कराचार्य', 'प्राचीन भारत में विज्ञान' आदि रचनाओं से भारतीय मनीषियों के वैज्ञानिक क्षेत्र में खोजों व विकासों की पड़ताल कर, प्रत्येक भारतीय को मूल वैज्ञानिक चेतना से जुड़ने का आह्वान किया है।

गुणाकर मुले हर प्रयास भारतीय जनमानस में वैज्ञानिक टेम्परामेंट व तार्किक विवेचन के स्पष्टीकरण का रहा है ताकि समाज को अंधविश्वासों से निकालकर बुनियादी वैज्ञानिक तथ्यों को जीवन में उतारा जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Found

दृष्टि The Vision

गुणाकर मूले ने ब्रह्माण्ड का व अंतरिक्ष वर्णन बेहद लोकप्रिय तरीके से किया है और अनंत ब्रह्माण्ड में खो जाने की स्तुति करते हैं।

गुणाकर मूले की अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं में अंतरिक्ष की यात्रा, विज्ञान क्या है?, प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक आदि हैं। गुणाकर मूले का अवदान इस तथ्य में भी है कि उनका एनसीईआरटी की वैज्ञानिक पुस्तकों के लेखन में अग्रणी भूमिका रही।

गुणाकर मूले द्वारा दिखाई राह पर अनेक रचनाकार बढ़े हैं, किन्तु ये प्रयास अभी अपर्याप्त हैं अतः इन प्रयासों को लगातार बढ़ाते रहना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा से जुड़ी है। किसी भाषा के प्रसार में सर्वाधिक भूमिका लिपि की होती है। लिपि जितनी वैज्ञानिक होगी भाषा के लेखन पाठन की अभिव्यक्ति करने की संभावना उतनी ही ज्यादा होगी।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता में निम्न विशेषताएँ सम्मिलित हैं-

(क) स्वरों एवं व्यंजनों का वर्गीकरण वैज्ञानिक है- स्वरों का क्रम मुख से हवा निकलने के क्रम में किया गया है इसी प्रकार वर्णों को ~~मूल~~ कंठ, मूर्धा, तालु, दंत, ओष्ठ, नासिका वर्ग के रूप में वर्गीकृत किया है। जैसे-

नासिका की - ~~क ख~~ ङ, ञ, ण, म, न, (ं)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का दूसरा कारण है - स्वरों का पूरा प्रयोग न कर उनकी मात्रा का प्रयोग करना

(ग) शिरोधार्य रेखा के कारण वर्णों की अशुद्धि तथा मिलावट होने की संभावना नहीं। जैसे - क मल ⇒ कमल

(घ) एक भाषा ध्वनि के लिए एक चिह्न तथा एक संकेत के लिए एक ध्वनि देवनागरी की वैज्ञानिकता का प्रमाण है।

(ङ) पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के प्रयोग के लिए अनुस्वार का प्रयोग प्रयत्नलाघव की व्यवस्था करता है।

(ङ) संयुक्त वर्णों की व्यवस्था अतिरिक्त शब्द लेखन से बचाती है। - जैसे - क्ष ⇒ ksh

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(च) अंग्रेजी की तरह उच्चारण व लेखन में भेद उत्पन्न नहीं होता। जैसे-
सुनामी - Tsunami

किन्तु, दूसरी ओर लिपि की वैज्ञानिकता को लेकर कुछ चुनौतियाँ भी हैं -
(1) कुछ लोगों का मत है कि देवनागरी में अंग्रेजी जैसी भाषाओं की तुलना में संकेतों की संख्या बहुत अधिक है तथा मात्राओं के ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ प्रयोग के कारण अत्यधिक जटिलता उत्पन्न होती है, जिसके कारण टंकण में दिक्कत आती है।
(2) कुछ ध्वनियों के लिए दो संकेत उपलब्ध हैं। जैसे -
भ, ल ; घ, ध ; त्र, अ ; म, झ आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(3) संयुक्त व्यंजन की व्यवस्था भी कोई जरूरत प्रतीत नहीं होती. क्योंकि उनके बिना भी काम चल सकता है। जैसे -

क्ष → क्ष , त्र → तरि

(4) 'इ' की मात्रा 'ि' बोलने में व्यंजन के ~~पहले~~ बाद जबकि लिखने में पहले आती है। यह इसकी क्रमागत वैज्ञानिकता को भंग करता है।

किन्तु, कुछ एक कमियों के बावजूद भी यह कहना गलत नहीं है कि नागरी लिपि किसी भी अन्य लिपि को टक्कर देने में सक्षम है। अपितु मानकीकरण के जरिये इसको अखिलभारतीय स्वरूप देने का प्रयास किया जा रहा है, जो संभव होगा तो केवल देवनागरी की वैज्ञानिकता के कारण।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी में लिंग व्यवस्था संस्कृत से ली गई है। संस्कृत में तीन लिंग हैं - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग व नपुंसकलिंग। किन्तु, भाषिक सरलीकरण की प्रक्रिया में संस्कृत से प्राकृत, पालि, अपभ्रंश, अवहट्ट तक आते आते नपुंसक लिंग को प्रायः पुल्लिंग में समाहित कर दिया। इस प्रकार हिन्दी में - स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दो लिंग हैं।

हिन्दी की लिंग व्यवस्था में निहित समस्याएँ -

(1) पूर्वी हिन्दी की कई बोलियों में अनावश्यक रूप से स्त्रीलिंग को पुल्लिंग बना दिया जाता है, जैसे - गाय घास खाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(2) संस्कृत के कई शब्द जो पुल्लिंग के रूप में प्रयोग किए जाते हैं, वे हिन्दी में स्त्रीलिंग के रूप में प्रयोग होते हैं - जैसे ऊर्जा।

(3) जब किसी वाक्य में स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दोनों व्यक्तियों का जिक्र आता है तो कोई लेखक क्रियारूप को स्त्रीलिंग तो कोई पुल्लिंग बना देते हैं।

7½
15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
ग के अतिरिक्त कुछ
लखें।
ase do not write
hing except the
ition number in
space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

हिन्दी भाषा शब्दावली की दृष्टि से अत्यंत धनी है। हिन्दी में शब्द के भिन्न भिन्न निर्माण व स्रोत रहे हैं। इस आधार पर हिन्दी शब्दों को मुख्यतः 4 वर्गों में बांटा जा सकता है -

(क) तत्सम शब्द (ख) तद्भव शब्द
(ग) देशज शब्द (घ) विदेशज शब्द

तत्सम शब्द →
हिन्दी में सर्वाधिक मात्रा तत्सम शब्दों की है। ये वे शब्द हैं जो हिन्दी ने अपनी मातृभाषा संस्कृत से हुबहू अवतरित किए हैं, इसलिए इनकी मात्रा भी सर्वाधिक है। उदाहरण → मृत्यु, शतदल आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तद्भव शब्द

तद्भव शब्द वे हैं जो ज्यों के त्यों संस्कृत से हिन्दी में नहीं आये, बल्कि ध्वनिक लेकशन में बिगड़ हिन्दी में आए हैं। जैसे - अश्रु से आँसू।

देशज शब्द →

ये वे शब्द हैं जो स्थानीय लोकभाषाओं से समाहित किए जाते हैं। जैसे - पावती।

विदेशज शब्द - विदेशज शब्द वे हैं जो भारत की किसी भाषा से संबंधित न थे बल्कि अन्य भाषाओं से भारत में आए हैं। विदेशी शब्दों में सर्वाधिक मात्रा अरबी फारसी, अंग्रेजी

Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की है। इनके अलावा भी अन्य भाषाओं के शब्द आ गए हैं, जैसे -

अंग्रेजी - रेल, डॉक्टर

अरबी - खुदा, जन्नत

फारसी → तालुका, तहसीलदार

जापानी - रिक्शा

स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा शाब्दिक आत्मसातीकरण के लिहाज से उदार भाषा है, यही इसे लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान करता है, इसी कारण हिन्दी एक मात्र भाषा है जो पूरे भारत में संपर्क का कारण बनती है।

5/6 15

निर्माण की प्रक्रिया?

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद बिहार में प्रचलित एक काव्यांदोलन है, जिसका दावा है कि प्रयोगवाद के सही हकदार वे हैं। इस काव्यांदोलन को नकेनवाद भी कहा जाता है। इसके तीन प्रमुख काव्यकार शामिल किए जाते हैं - जिनमें केसरी कुमार, नलिन विलोचन शर्मा, नरेश हैं।

प्रपद्यवादियों का कहना है कि 'तारसप्तक' से पूर्व ही वे अपनी रचनाओं में विभिन्न प्रयोग कर रहे थे, इसलिए प्रयोगवाद के स्थान पर उस दौर में उनका केन्द्रीय महत्व होना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु इनके काव्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि जिस स्वाधीनता की तलाश अन्य कवि कर रहे थे, वह प्रपद्यवाद में नहीं मिलती और न ही इनके शिल्पगत वैशिष्ट्य उतने प्रभावी हैं।

5/10

थोड़ा और गहराई लाएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) तारसप्तक

'तारसप्तक' प्रयोगवाद काव्यांदोलन की घोषणा मानी जाती है, जिसको कवि अज्ञेय ने 1943 में प्रतिपादित किया। वस्तुतः इससे पूर्व प्रगतिवादी आंदोलन चल रहा था जो विचारधारा के यांत्रिक प्रयोग पर बल दे रहा था और रचनाकार के विशिष्ट व्यक्तित्व की उपेक्षा कर रहा था; वस्तु के समक्ष शिल्प को गौण मान रहा था।

1943 में 'तारसप्तक' के जरिये अज्ञेय ने सात कवियों की रचनाओं का संकलन किया, जिसमें शामिल कवि हैं- अज्ञेय, मुक्तिबोध, रामविलासशर्मा, धर्मवीर भारती,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्पष्ट है कि 'तारसप्तक' के जरिये अज्ञेय ने घोषणा की कि वे स्वअनुभूति की प्रामाणिकता के जरिये नए प्रयोग करेंगे और शिल्प को प्रमुख महत्व देंगे। इस लिहाज से प्रायः प्रयोगवाद को प्रगतिवाद का विरोधी कहा जाता है किन्तु स्पष्ट है कि प्रयोगवाद में मुक्तिबोध, रामविलासशर्मा सहित 3-4 कवि ऐसे थे जो प्रतिबद्ध रूप से मार्क्सवादी थे। अतः इसे मार्क्सवाद के ~~विरोधी~~ विरुद्ध कहना पूर्णतः उचित नहीं है।

वस्तुतः 'तारसप्तक' के साथ ही प्रयोगवादियों ने अपने अपने तरीके से राह की खोज का कार्य शुरु किया और ~~महत्वपूर्ण~~ प्रयोगवाद जैसे महत्वपूर्ण काव्यांदोलन को जन्म दिया जो, प्रगतिवाद व नई कविता का संक्रमण बिंदु बनकर सामने आया।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

~~पंत है~~

छायावाद के प्रमुख चार कवियों में से पंत एक हैं। पंत छायावाद की सभी प्रतिनिधि विशेषताओं को धारण करते हैं। स्पष्ट है कि छायावाद को लेकर शुक्लजी का रवैया उत्साहजनक नहीं रहा। उन्होंने छायावाद को महज प्रतीकवाद व रहस्यवाद कहकर संबोधित किया और इन्हें संप्रेषणीयता में बाधक बताया। साथ ही स्वच्छंदतावादी धारा को अवरुद्ध करने का दोष भी मढ़ दिया।

ऐसे में छायावाद के चारों कवियों को समीक्षा के क्षेत्र में उतरना पड़ा ताकि छायावाद को शुक्ल जी की गलत व्याख्या से बचाया जा सके। 'पल्लव की भूमिका'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के जरिये पंत शुक्लजी के आरोपों का जवाब देने का प्रयास करते हैं। पंत लिखते हैं कि छायावाद का उद्देश्य महज आध्यात्मिकता की तलाश में पलायन करना नहीं है, बल्कि यह रचनाकार की सामाजिक टकराहट का स्वाभाविक परिणाम है। छायावाद रचनाकार के विशिष्ट व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है और छायावाद स्वच्छंदतावाद को अवरुद्ध नहीं करता बल्कि उसको आगे विकास करता है।

3/10
अपर्याप्त उत्तर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) साकेत की उर्मिला

भारतीय साहित्य परंपरा में संस्कृत से लेकर हिन्दी तक उन विशिष्ट पुरुष पात्रों को ही महत्व दिया है, किन्तु इस ओर बहुत कम या यूँ कहें कि किसी का भी ध्यान नहीं गया कि बुद्ध, कृष्ण, राम के महान बनने के पीछे महिलाओं का योग सर्वाधिक रहा है। द्विवेदी युग ऐसे ही महिलापात्रों को महत्व दिलाता है। 'प्रिय प्रवास' के जरिये राधा के सामाजिक पक्ष व त्याग, 'यशोधरा' के जरिये बुद्ध की पत्नी यशोधरा के त्याग व 'साकेत' के जरिये लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को महत्व दिलाने का अद्भुत प्रयास किया।

साकेत में राम कथा के जरिये गुप्त जी ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि लक्ष्मण महान और भक्त बने हैं तो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण उनकी पत्नी उर्मिला हैं। इसी भाव भूमि पर चलते हुए गुप्त जी उर्मिला को नायकत्व प्रदान करते हैं और साकेत का पूरा 'नौवा सर्ग' उसको ही समर्पित करते हैं। नौवे सर्ग में उर्मिला का वियोग बेहद मर्मस्पर्शी व हृदयविदारक बन पड़ा है -

"सजनि रोता है मेरा गान
प्रभु तक नहीं पहुँच पाती है, उनकी कोई तान।"

गौरतलब है कि गुप्त जी की नारी दृष्टि ही है जो उर्मिला जैसे पात्रों को न्याय दिलाने का प्रयास करती है, इस दृष्टि से साकेत का युग युग महत्व रहेगा।

Copyright :- Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

~~रहस्यवाद को~~

रहस्यवाद को छायावाद की प्रतिनिधि विशेषता माना जाता है, जिसको लेकर शुक्ल जी ने आधुनिक काल में आध्यात्मिक होने व शब्द के लोकप्रियता को बाधित करने का आरोप लगाया है, तो नंददुलारे वाजपेयी जैसे समीक्षकों ने इस रहस्यवाद को लौकिक दृष्टिकोण प्रदान कर आधुनिकता से सुसंगत बनाया है।

रहस्यवाद की अनुभूति वैसे तो प्रसाद, निराला व पंत के यहाँ भी होती है, किन्तु ~~सर्वाधिक~~ गहराई महादेवी में दिखती है; वह कहती हैं कि " ~~जिस दिन खेलोगी ममता खेल~~

"जिस दिन होगा मेरी लघुता का मेल
देखोगे देव खेलोगी ममता का खेल।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महादेवी की अपने ईष्ट के प्रति आकांक्षा इतनी अधिक है कि उन्हें कबीर की भाँति दुख व विरह की अत्यधिक अनुभूति होती है। वह कहती है कि "मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।" महादेवी अपने दर्शन में बौद्धवाद के शून्यवाद से प्रेरित नजर आती है और यही शून्यवाद उन्हें रहस्यवाद की ओर ले जाता है।

स्पष्ट है कि महादेवी का रहस्यवाद कबीर, जायसी आदि के आध्यात्मिक कारणों से नहीं उपजा है, वरन वैयक्तिक स्वतंत्रता की चाह और सामाजिक टकराव से मिली निराशा व पराजय बोध से उत्पन्न हुआ है, एक महिला होने के कारण अस्तित्व का हनन समाज द्वारा सर्वाधिक किए जाने पर रहस्यवाद की अधिक गहरा बनकर सामने आता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मैथिलीशरण गुप्त के विभिन्न काव्य-ग्रंथों का आधार ग्रहण करते हुए उनकी नारी-भावना का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~मैथिलीशरण~~ गुप्त नारी दृष्टि को लेकर दोराहे पर खड़े हैं। एक ओर जहाँ वे नारी की दुर्दशा पर खेद प्रकट करते हैं वहीं दूसरी ओर वे नारी को पति के प्रति त्यागयुक्त जीवन जीने की कामना करते हैं।

'भारत भारती' गुप्त जी की नारीदृष्टि के त्यागमूलक पक्ष को उद्घाटित करता है, यह हिन्दू धर्म का वह आदर्श सनातन रूप है, जिसकी तत्कालीन हिंदुवादी नेता कामना कर रहे थे -

" पूजन किया पति का भक्तिपूर्ण विधान से
फिर विश्व की भगवान से "

स्पष्ट है कि नारी के प्रति इस दृष्टिकोण को लेकर प्रगतिवादी समीक्षकों ने उन पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन नारी के पक्ष लेने के आरोप लगाए हैं।

यह बात सत्य है कि वैष्णवी संस्कार के चलते वे प्रसाद की भांति नारी को ऐसे ही आदर्श रूप में देखते किन्तु वे नारी की तत्कालीन दुर्दशा पर भावोद्रेक चिंता प्रकट करते हैं -

" नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
~~आंखों में~~ आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

गुप्तजी की नारी दृष्टि साकेत, यशोधरा व विष्णुप्रिया में वह चिंता प्राप्त पाती जिसकी तुलसी, सूर व कबीर जैसे दिग्गज उपेक्षा करते रही। उन्होंने उन उपेक्षित नारी चरित्रों को न्याय दिलाने का बीड़ा उठाया जो अभी तक स्मृति से विस्मृत रहे हैं। साकेत के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नवम सर्ग को लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को ~~सर्मि~~ समर्पित किया -

"सजनि रोता है मेरा गान
प्रिय तक नहीं पहुँच पाती है उसकी कोई तान।"

जो चिंता साकेत की उर्मिला की है वही चिंता 'यशोधरा' में बुद्ध की पत्नी यशोधरा की है। यशोधरा को मूल चिंता इस बात की है कि उनके पति उन्हें जाने तक की बात बताकर नहीं जाते -

"सिद्धि हेतु ~~स्वामी~~ स्वामी गये यह गौरव की बात
पर चोरी चोरी गए यही बड़ा व्याघात
सखि, वे मुझसे कहकर जाते, तो
कह, क्या वे मुझको अपनी पथबाधा ही पाते।"

स्पष्ट है कि परित्यक्त नारियों की पीड़ा गुप्त जी महसूस करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है जो 'विष्णु प्रिया' के चरित्र के जरिये और गहराई तक जाती है।

इस प्रकार कहें तो गुप्त जी नारी की दशा पर क्षोभ प्रकट करते हैं, के केकयी जैसे चरित्र के प्रति भी तटस्थ व्यवहार करते हैं, वे नारी मुक्ति के समर्थक तो हैं किन्तु पारिवारिक दायरे के भीतर। यह बात आज के नारीवाद के लिहाज से उचित नहीं किन्तु तत्कालीन कुरीतियों में नारी को राहत पहुंचाने के लिए की गयी थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी यात्रा-साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के प्रदेय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी यात्रा साहित्य जिन यायावरों के कारण रोचक और पठनीय बन पड़ा है उनमें महापंडित राहुल सांकृत्यायन प्रमुख हैं। उनका जीवन ही यात्राओं से भरा पड़ा है, जिसकी घोषणा वे इस तरह करते हैं -

"सैर कर दुनिया की ~~गा~~ गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगानी गर रही तो ये जवानी फिर कहाँ।"

राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ जीवन जीने के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने घुमक्कड़ी के महत्व को दर्शाने के लिए घुमक्कड़ शास्त्र की रचना की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राहुल सांकृत्यायन भारत के उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, केरल के यात्रा साहित्य का वर्णन तो करते ही हैं, यूरोप के विविध राष्ट्रों एवं उनके शहरों - पेरिस, लंदन, वेनिस, बर्लिन, ~~केमब्रिज~~ आदि का भी रोचक वर्णन करते हैं। उनके यात्रा वर्णन की खासबात है कि वे स्थानीय संस्कृति, लोगों के रहन सहन, हाव-भाव, जीवनचर्या, सांस्कृतिक पक्षों, ऐतिहासिक वर्णनों को भी लिखते चलते हैं।

उनकी प्रमुख रचनाओं में तिब्बत में ~~सवा~~ सवा साल, मेरी यूरोप यात्रा, मेरी श्रीलंका यात्रा, रूस में 25 साल आदि हैं। इन देशों के सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक पक्षों को भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने उभारा है।

स्पष्ट है कि राहुल की भाषा सामान्यतः सरल व सुबोध रही है किन्तु जब वे चिंतन व विचार करते हैं तो स्वाभाविक रूप से जटिलतर हो जाते हैं। राहुल ने न केवल भौगोलिक यात्राएं की हैं, बल्कि अपने अंतर्मन की यात्रा भी उनके वर्णनों में व्यक्तित्व की छाप छोड़ती है।

इस कारण यात्रा साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान बन पड़ा है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिन्दी रेखाचित्र के विकास में रामवृक्ष बेनीपुरी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेखाचित्र हिन्दी की विशिष्ट विधा रही है। जिसमें विभिन्न प्रकार के वर्णनों को रेखाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। यह रचना कौशल कुछ एक चुनिंदा लोगों के पास रहा है, जिनमें रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम अग्रगण्य है।

रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र वैचारिकता का पुट देते हैं। भावशीलता की अनोखी अभिव्यक्ति करते हैं। बड़ी से बड़ी बातों को बेहद तरल व कम शब्दों में घुमाकर कह देने की कला उन्हें अन्य रेखाचित्रों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से विशिष्ट बनाती है।

रामवृक्षजी की भाषा सरल है और शब्दावली के स्तर पर वे किसी भी भाषा से परहेज नहीं करते। अंग्रेजी फारसी शब्द उर्दू यहाँ सहजता से आश्रय पाते हैं।

अपेक्षित ...

4/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation